हिन्दी कहानियों में चित्रामुद्गल जी का स्थान

डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा

कला एवं मानविकी (भाषा विभाग) क्राइस्ट विश्वविद्यालय, बेंगलूरू

भूमिका :- हिन्दी साहित्य में अनेक विधाएं हैं किन्तु किसी भी कहानीकार की कहानी की मूलतः उत्पति व्यक्ति के जीवन के अनुभव समास की रीति आदि पर आधारित ही मानी जाती है ।

चित्रा जी की इन कहानियों में मनुष्य के जीवन में आने वाले उतर-चढ़ाव और अनेकों प्रकार से जीवन के संघर्ष पूर्ण पलों को अनेकों पात्रो के माध्यम से पाठको तक बड़ी सहजता से पहुँचाया गया है । जिनमें मनुष्य न चाहते हुए भी जीवन में अनेक पहलुओं पर सदैव संघर्ष शील रहता है । कभी कर्मों के कारण तो कभी लालसा और पिपाशा की वजह से तो कभी पारिवारिक बंधन तो कभी समाज और समुदाय या फिर धार्मिक वजह अथवा फिर राजनैतिक और कभी परम्परा के वशीभूत होकर वह अपने जीवन पर्यन्त संघर्ष के जाल में घूमता रहता है । क्योंकि वैसे भी कहा जाता है कि जीवन का दूसरा नाम संघर्ष ही है ।

प्रस्तुत लेख में चित्रा मुद्गल जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन है जिसमें उनका जीवन परिचय, शिक्षा, सेवा कार्य, लेखन, मुख्य कृतियाँ, सामाजिक कार्य के साथ-साथ सम्मान और पुरस्कार के बारे में बताया गया है ।

लेखन बिंदु :-

१. नये आयाम २. परिवर्तन शक्ति ३. भाव गर्भित ४. परिकल्पना

५. भाषा स्पष्टता ६. ह्रदय-स्पर्शी ७. सामाजिक परिवेश

प्रस्तावना :- हिंदी साहित्य जगत में समय-समय पर अनेकों गुणी रचनाकार पुरुष और महिला दोनों ही हुए हैं, किन्तु "मातृत्व' एक ऐसा शब्द है जो हर नारी के व्यक्तित्व को नये आयाम प्रदान करता है । महिला उपन्यासकारों की लेखनी का कौशल उसके इस पक्ष की ओर भी गया । प्राचीनकाल में जहाँ नारी की उपादेयता मात्र मातृत्व के कारण थी । वहीं नारी चेतना में आये परिवर्तनों ने उसे जीवन के दो पायदानों पर खड़ा कर दिया है । सर्वप्रथम उसे अपना भविष्य संवारना था, तो दूसरी ओर भविष्य बनाने के बाद खलीपन को भरता था और इसी प्रक्रिया में उसके भीतर उपजा मातृत्व के प्रतिद्वन्द्व अपनी इस शास्वत रचना प्रक्रिया में शामिल होकर नारी कहीं अपने आस्तित्व का बोध करना चाहती है तो कहीं- कहीं मातृत्व को लिजलिजी पुरुष परम्परा का प्रतीक मानकर मातृत्व को एक सिरे से खरीज कर देती है भविष्य आज की व्यस्त भागदौड़ भरी जिंदगी, भौतिक सुविधाओं की ललक, स्वचेतना, सामाजिक मूल्यों का विघटन, नारी मुक्ति ने पारम्परिक समाज की रुपरेखा को बहुत हद तक बदल दिया है । चित्रा मुद्गल जी ने रचनाशीलता का सहारा लेते हुए इन सामाजिक बन्धनों और परिपाटियों पर करार प्रहार किया है ।

लेख बिस्तार :- हिन्दी साहित्य में महिलाओं द्वारा कहनी लेखन का प्रराम्भ लगभग कबीर के युग से शुरू हुआ था । कहानी लेखन में महिलाओं का प्रवेश बंग

महिला राजेन्द्रबाला घोष से माना जाता है । सन १९६० के बाद हिन्दी कहानी साहित्य में आई महिला लेखिकाओं ने अपने मौलिक चिंतन के साथ जीवन की समस्याओं के साथ भारतीय नारी जीवन के विविध पहलुओ पर कहानियाँ लिखी हैं । समकालीन महिला कहानीकारों में शिवानी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा , मन्नू भंडारी , मृदुला गर्ग, शशिप्रभा शास्त्री, मणिका मोहिनी, मृणाल पण्डे, निरुपमा सेवती, दीप्ति खंडेलवाला, सुधा अरोरा, नासिर शर्मा, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल आदि उल्लेखनीय हैं ।

1. नये आयाम को प्रदर्शित करती कहानियाँ :- चित्रा मुद्गल जी ने कथा साहित्य में अपनी विशेष पहचान बनाई है । वे श्रेष्ठ कहानीकार तो हैं ही, साथ ही श्रेष्ठ उपन्यासकार भी हैं । चित्राजी जिस परिवेश और वतावरण में पली-बड़ी हुई हैं उन्ही अनुभवों को अपने में समेटकर अपनी लेखनी को आयाम दिया है । इनकी कहानियाँ बदलते परिवेश को लेकर लिखी गई हैं । यहाँ स्त्री द्वारा स्त्री को लेकर ही नहीं लिखा गया बल्कि विविध विषयों की लेकर बुनी कहानियाँ एक पूरे युग की झांकी दिखलाती हैं । बदलता हुआ परिदृश्य, वैविध्य और असीम विस्तार समेटे कहानियाँ नयी परंपरा की नीव डालती हैं । झुग्गी-झोपड़ी से लेकर उच्च वर्ग के समाज को लेकर गुनी-बुनी कहानियाँ चिरस्मरणीय हैं । चित्रा जी की कहानियाँ समाज के हर पहलू को छूने का प्रयास की हैं चाहे वह एक पारिवारिक कलह एवं पारिवारिक संघर्ष हो या भी सामाजिक संघर्ष, जातिगत भवना या धार्मिक मतभेद सभी बिन्दुओं पर कहानियाँ समाज का मार्गदर्शन कर रही हैं । सहित्य के अध्ययन के साथ-साथ साहित्यकार का व्यक्तित्व भी उभरकर हमारे सामने आ जाता है । साहित्यकार अपमी कृति में इस प्रकार व्याप्त रहता है जैसे शारीर में आत्मा और नभमंडल में वायु । यही कारण है कि उसके व्यक्तित्व के रूप-प्रतिरूप साहित्यकार द्वारा रचित साहित्य में यत्र-तत्र बिखरे रहते हैं । यह बात पूरी तरह से चित्रा मुद्गल जी की कहानियों में देखने को मिलती है इनकी कहानियाँ नए आयाम को लिए हुए सजी और सवारी हैं । चित्रा जी कई कहानियाँ आज के परिवेश में होने वाले यथार्थ पर आधारित हैं । जहाँ तक कहानी के तत्वों की बात की जाए तो कहानी में निम्न तत्व होने आवश्यक हैं, जिनके आभाव में कहानी नहीं मानी जा सकती ।

१. यथार्थ २. स्वाभिकता 3. सत्य ४. संवेदना ५. गहराई ६. नवीनता ७.एकांश

१. यथार्थ:- एक अच्छी कहानी में यथार्थ का होना बहुत जरुरी है । उसमें कल्पना का मिश्रण किया जा सकता है पर कल्पना में यथार्थ का मिश्रण नहीं किया जा सकता । चित्रा जी की कहानियों में यथार्थ ही एक शक्ति के रूप में सन्नहित है ।

२. स्वाभाविक :- एक अच्छी कहनी पूर्णत: सहज, स्वाभाविक प्रतीत होती है । हर अच्छी कहानी पूरी तरह विश्वसनीय होनी चाहिए । इस स्तर पर यदि हम चित्रा जी की कहानियों पर ध्यान दे तो पायेगें कि उनकी हर कहनी हकीकत नजर आती है । जो मूलतः समय और सामाजिक संघर्ष पर जीवन की हकीकत होती है ।

3. सत्य :- कहनी का यथार्थ ऐतिहासिक यथार्थ से भिन्न होता है । कहानी का यथार्थ कलात्मक और संवेदनात्मक यथार्थ है । कहानी वास्तविक प्रतीत होनी चाहिए । कहानी का सच्चा होना कतई जरुरी नहीं लेकिन उसका सच्चा मालूम होना जरुरी

है । चित्रा मुद्गल जी की कहानियां सत्य प्रतीत होती हैं, क्योंकि उनकी कहानी में समाज में होने वाले कामो को प्रमुखता प्रदान की जाती है ।

४. **संवेदना** :- कहानी के सन्दर्भ में सबसे अधिक मूल्यवान है, मानव मन की संवेदनाएं । हम ऊपरी और बाहरी क्रियाओं में नहीं बल्कि अपनी भावनाओं में जीते हैं । जीवन के घटना-चक्र में हम सुख-दुःख, आशा-निराशा,प्रेम-घृणा, क्रोध-लज्जा, उत्साह-उदारता आदि विविध भावों द्वारा आन्दोलन होते रहते हैं । जीवन इसी का नाम है । एक अच्छी कहानी हमारी इन्ही भावनाओं का चित्रण करती है । कहानी हमारी संवेदनाओं को उजागर करती है । एक घटना स्वयं में तो सिर्फ इतिहास है । लेखक अपनी अनुभूति और कल्पना द्वारा पात्रों में उस घटना से होने वाली प्रतिक्रिया की कल्पना करता है, तभी घटना कहानी का रूप लेती है ।

५. **गहराई** :- कहानी फैलाव में नहीं बल्कि गहराई में चलती है । कहानी जीवन के एक कालांश को लेती है तथा उसी का अधिकाधिक गहरे और बारीकी के साथ चित्रण करती है । कहानी में एक मुख्य घटना रहती है और उसी घटना से जुडी संवेदनाओं को गहनतापूर्वक अंकित किया जाता है । चित्रा जी की कहानियों में इसकी प्रमुखता होती है तभी तो हर पाठक चित्रा जी की कहानियों में स्वयं को देखता है ।

६. **नवीनता** :- कहानी का एक और आवश्यक गुण है-नवीनता । नवीनता से रोचकता स्वयंमेव आ जाती है कहानी में नवीनता कई प्रकार की हो सकती है शैली और शिल्प की नवीनता, विषय की नवीनता, दृष्टीकोण की नवीनता आदि । हिंदी साहित्य में नयेपन को अधिक महत्व देने वाली "नयी कहानी" नामक धरा का जन्म हुआ । चित्रा जी स्वयं एक खुले विचार की महिला हैं, इस बात का परिचय उनकी हर काहनी में नजर आता है जो की समाज के हर क्षेत्र में एक नयी दिशा और स्वतंत्र रूप से काम करने की प्रेरणा प्रदान करती है ।

७. **एकांश** :- किसी समीक्षक ने कहानी को 'जीवन की फांक' कहा है । कहानी को जीवन की फांक मानने का अर्थ हुआ की हम इसकी यथार्थमयता, विश्वसनीयता, स्वाभाविकता आदि गुणों को स्वीकार करते हैं । एक अच्छी कहानी वास्तव में ही हमें अपने जीवन के अंश जैसी प्रतीत होती है । उसमें लेखक प्रायः अनुपस्थित रहता है । एक रचनाकार बड़ी सहजता से अपने विचार और समाज के अस्तित्व के लिए यथार्थ परक रचनाओं की रचना करता है और यह रचना कहानी के रूप में समाज का मार्गदर्शन करती है । चित्रा जी की हर कहानी में सिर्फ दर्द या कथा न होकर उसकी हर समस्या का समाधान भी पात्रों के द्वारा कराया जाता है जो समाज के लिए एक मार्गदर्शन का काम करती हैं ।

2. **परिवर्तन शक्ति से परिपूर्ण** :- दरअसल रचना और विचारधारा की दुनिया में कथा-कहानी का जो शास्त्र है उसका गहरा संबंध कहानी कहने, कथा के चुनने और कहने के समय से है। समकालीन हिन्दी कहानी पर विचार करते हुए यह बात साफ होती है कि इस दौर के कहानीकारों ने समकालीन समय, समाज परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए कहानी की दुनिया रची है। इसीलिए इस दौर के कहानियों की जो दुनिया है, वहाँ कहानी के रचने अथवा सर्जनात्मकता की ये प्रक्रियाएँ इतनी जटिल और विविधतापूर्ण हैं कि उन पर विचार एवं उनका आकलन करना अत्यंत दुःसाध्यपूर्ण कार्य है। इसीलिए मक्सिम गोर्की सृजनात्मकता के

इतिहास को मानव इतिहास से कहीं अधिक दिलचस्प और महत्वपूर्ण मानते थे। कारण, मानव इतिहास को समझने के लिए बहुत सारे तथ्यात्मक संदर्भ होते हैं परंतु सृजनात्मकता का जो इतिहास है वह लेखक-कलाकार की जिन्दगी, उसके जाने-अनजाने परिवेशों, प्रसंगों अनुभवों एवं विचारों के कई ऐसे पक्षों से निर्धारित और नियंत्रित होता है जिसे समझने के लिए सृजन की उदात्तता तक पहुँचना पड़ता है। यह यात्रा रोचक होने के साथ-साथ अत्यंत जटिल भी होती है। उदाहरण के लिए, समकालीन हिन्दी कहानी, सिर्फ वस्तु और कला की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यहाँ इतिहास, सामाजिक विमर्श वैचारिकताओं की टकराहट, राजनीतिक संघर्ष, अनुभव आदि की ऐसी अनेक निर्मितियाँ दिखलाई पड़ती है जिसे मात्र पारंपरिक तरीके से नहीं समझा जा सकता है। उसे समझने के लिए इतिहास, समाजशास्त्र राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, मनोविज्ञान आदि की समझन के साथ-साथ मानव स्वभाव के सर्जनात्मक पक्ष की समझ होनी भी जरूरी है। कारण, समकालीन हिन्दी कहानी की दुनिया में इतनी तरह की विविधताएँ है कि पाठकों का जब उनसे सामना होता है, तब वे तय नहीं कर पाते हैं कि वे कोई कहानी पढ़ रहे हैं अथवा सामाजिक संघर्षों में स्त्री और दलित जीवन का इतिहास देख रहे हैं; सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन एवं विकास की बारीकियों से गुजर रहे हैं या अर्थशास्त्र अथवा बाजारवाद के व्यवहारिक पक्ष की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इसी प्रकार भूमण्डलीकरण की कई ऐसी प्रक्रियाएँ है, जो इधर के नये कहानीकारों में साफ-साफ दिखलाई देती है। यहाँ इन्टरनेट की दुनिया से लेकर एक सुविधाभोगी भौतिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नव-निर्मित उत्पादनों की भरमार है आज की जिन्दगी के यथार्थ को एक नये ढंग से रचा जा रहा है और मनुष्य है कि उसके मायाजाल से निकल ही नहीं पा रहा है ।

चित्रा मुद्गल ने अपनी कहनियों में व्यक्ति के संघर्ष पूर्ण जीवन का चित्रण ही नहीं किया है बल्कि पात्र चरित्र से समाज में परिवर्तन की झलक का प्रतिपादन भी कराया है । समाज, राजनीति के यथार्थ तथा बाजारवाद के मायाजाल में फंसे मनुष्य एवं उसके अंतर्मन की बेचैनी, भय, अंतर्द्वद्व अदि का का प्रभावशाली चित्रण अपनी कहानियों में चित्र मुद्गल जी ने बड़ी रोचकता और हृदयग्राही ढंग से किया है। खास बात यह है कि परिवर्तन और नये विकास की इन प्रक्रियाओं को आज तक के कहानीकारों से ज्यादा और सटीक चित्रा मुद्गल जी ने सरल और सुगठित भाषा तथा कलात्मक यथार्थ के साथ गढ़ा है। वस्तुतः साहित्य एवं समाज के बीच की यह वही सन्धि है जिसे समकालीन साहित्य अथवा कहानी का अध्ययन करते हुए समझा जा सकता है। यद्यपि कहानी के समानान्तर साहित्य की अन्य विधाओं में भी समकालीन समाज की सोच और समय की उपस्थिति दिखलाई पड़ती है चाहे वह उपन्यास हो या कविता परंतु कहानी में समकालीन समाज की जिन्दगी तथा सोच में आये परिवर्तनों का जितना यथार्थ दिखलाई पड़ता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है । कारण, आज की कहानी में कला भी है और समाज की समझ भी, जिंदगी के यथार्थ से जुड़ी सर्जनात्मक भाषा भी है और उसे अन्य सामाजिक समुदायों के साथ जोड़कर सार्वजनिक चरित्रों के निर्माण की क्षमता भी।

3. भाव गर्भित कहानियाँ :- सुप्रसिद्ध कथाकार चित्रा मुद्गल अपनी कहानी-लेखन की अब तक के लगभग पाँच दशक की रचना-यात्रा में अनेक लोकप्रिय कहानियाँ

लिखी हैं। वे सघन सामाजिक सरोकारों से कहानियों को आकार देती हैं। अवध क्षेत्र से लेकर चेन्नई, मुंबई व दिल्ली आदि तक उनका अनुभव विस्तीर्ण है। 'डोमिन काकी' से लेकर महानगरों में व्यस्त कामकाजी महिलाओं तक का उन्होंने गहरा अध्ययन किया है। स्त्री-विमर्श की गहमागहमी से अलग रहकर भी उन्होंने हाशिए की ओर ढकेली जा रही स्त्री के बहुतेरे प्रश्नों की पड़ताल की है। वे वंचित व्यक्तियों की पक्षधर रचनाकार हैं। इनकी कहानी सच्चे अर्थों में कहानी है, जिसमें जीवन का सच्चा समन्वयकारी यथार्थ है, रोचकता है, संवेदनाएँ हैं और व्यंजना है। इनकी कहानियाँ पढ़ते हुए जो बिंब बनते हैं, उनका अंतर्निहित अर्थ एक प्रकाशपूर्ण क्षण में उद्घाटित होकर ग्रहण होता है। कहानी की प्रकृति जनतांत्रिक होती है और उसका रसास्वादन अनुभवपरक बोध से होता है। कहानी एक समग्र प्रभाव को संप्रेषित करती है। मनुष्य जब अपनी क्षुद्रताओं, कमजोरियों और छलावों को स्वीकार करता है तो इस स्वीकार से वह आत्मोन्नयन करता है। इस संग्रह की लोकप्रिय कहानियाँ उपदेशात्मक या निर्देशात्मक नहीं, निर्णयात्मक और क्रियात्मक संकल्पों से संपन्न हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि हर कृति का कुछ न कुछ लेखकीय सरोकार अवश्य होता है, वरना लेखक लिखने में क्यों समय और ऊर्जा बर्बाद करते। हालांकि यह जरूरी नहीं कि हर कृति लेखकीय सरोकार की वांछित या उच्चतम अवस्था तक पहुंच ही जाए। जो कृतियां ऐसा करने में सक्षम होती हैं, वे साहित्य में अपने स्थान को सुरक्षित कर लेती हैं। कहानी का केंद्रीय बिंदु कथानक होता है। एक कहानीकार कथानक को कलात्मक टूल्स के जरिए कहानी में परिवर्तित करता है। मुख्यत: कहानीकार की पहचान उसकी कहानी कहने की कला से ही होती है। कथानक तो किसी के पास भी हो सकता है। कथानक को कहानी बनाने के लिए कला की जरूरत होती है। उपयुक्त कला तत्वों के अभाव में श्रेष्ठ कथानक की परिणति भी असफल कहानी के रूप में होती है, लेकिन कथानक व उसके वैचारिक पक्ष से ही कोई कहानी श्रेष्ठ बनती है। साहित्य की दूसरी विधाओं की अपेक्षा कहानी का वैचारिक पक्ष अधिक महत्त्वपूर्ण है। कहानी पात्रों के माध्यम से कही जाती है। यानी पात्र और उनके सामाजिक परिवेश के अंतर्संबंधों से कहानी का जन्म होता है। व्यक्ति का सामाजिक परिवेश, उस सबसे प्रभावित होता है जो समाज में उपस्थित होता है। यानी एक अच्छे कहानीकार के लिए समाज, राजनीति, विज्ञान यानी संपूर्ण राज व्यवस्था की मूलभूत जानकारी रखना आवश्यक है।

4. परिकल्पना का सागर :- चित्रा मुद्गल की कहानियां अनायास ही पाठकों को अपनी ओर खींचती हैं। चाहे 'पेंटिग अकेली है ...' का पात्र 'जे' हो या फिर 'ठेकेदार' का किरदार रामेसुर कक्का और छेदी हो। स्त्री को कई कोणों से देखते हुए उसकी स्थिति पर विचार करता है चित्राजी का कथाकार मन। 'आँगन की चिड़ियाँ' की 'दीवू', 'जंगल' की 'तविषा', 'गिल्टी रोजेस' की 'गुनाबाई', 'तर्पण' की 'अमृता और रतानिया' तथा 'जोंकें' की पुष्प और विद्याजी इस दृष्टि से यादगार चरित्र हैं। चित्रा मुद्गल की विशेषता यह है कि उनके पात्र जीवन से सीखे लेते दिखते हैं। लेखिका ने आम आदमी के जीवन की घटनाओं व छोटी-छोटी स्थितियों को बड़ी खूबी के साथ एक सूत्र में पिरोया है और यही कथाकार की ताज़गी है जो अपने पाठकों के साथ संवाद करती दिखती है। इस संकलन में चित्रा जी की सभी कहानियां भारतीय परिवेश की वे रचनाएं हैं जिनमें आम आदमी का चरित्र उभरकर आया है।

विभिन्न विसंगतियों को बड़े सलीके से चित्रा मुद्गल ने दर्शाया है, उकेरा है, जीवंत किया है। दूरदर्शन के लिए टेलीफ़िल्म 'वारिस' का निर्माण किया। साथ ही कई कहानियों को आधार बनाकर 'एक कहानी', 'मझधार', 'रिश्ते' जैसे चर्चित धारावाहिकों में फ़िल्माया गया। अब तक दर्जन से ऊपर कहानी संग्रह, कई उपन्यास, बाल उपन्यास, संपादित अनगिनत महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित। बहुचर्चित उपन्यास 'आवां' पर बिड़ला फाउंडेशन का 'व्यास सम्मान' पहला अंतर्राष्ट्रीय 'इंदु शर्मा कथा सम्मान', लंदन (इंग्लैंड), हिंदी अकादेमी (दिल्ली) व उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान सहित अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित। इन दिनों अनेक महत्वपूर्ण योजनाओं को साकार करने में रत एवं सक्रिय। चित्रा मुद्गल जी की कहानियों में आधुनिकता बोध के रूप में परम्परा और आधुनिकता के मध्य संघर्ष, पर्याप्त रूप से चित्रित हुआ है । जीवन के रहन-सहन , सभ्यता, संस्कृति और दृष्टिकोण में पुरानी और नई पीढ़ी में टकराहट है । कहानियों में लेखिका ने एक ओर पुरानी पीढ़ी के मूल्यों, दृष्टिकोण, सभ्यता और संस्कृति का समर्थन किया है, तो दूसरी ओर सड़ी-गली, जर्जरित आस्थाओं, रूढ़ियों , मूल्यों और जड़ परंपरा से भी लड़ा है और उनका उच्छेद करने की चेष्टा की है । प्रेम यौन सम्बन्ध, धर्म-जाति, पांति नैतिकता आदि को यथार्थ के धरातल पर ही देखा है और मूल्यवादी दृष्टिकोण से भी परखा है । मूल्यवादी आधार पर ही चित्रा मुद्गल जी परम्परा और आधुनिकता की ओर झुकी हुई दिखाई देती है । इनकी कहानियों में नारी के बदलते परिवेश के कारण प्राचीन सामाजिक संरचना में बड़े गहरे परिवर्तन दिखाई देते हैं । पुरुष का दोहरा नैतिक मानदण्ड , नारी की स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त करने की इच्छा दोनों परस्पर टकराकर संघर्ष की मुद्रा लिए हुए है ।

चित्रा जी की कहानियों में प्राचीन व्यवस्था के प्रति भी नारी का मोहभंग दिखाई देता है । आधुनिकता के प्रभाव से पारिवारिक सम्बन्धों के प्रति आत्मीयता , आस्था, समर्पण, त्याग आदि की भावना वह खो चुकी है । इनकी कहानियों में नारी का मोहभंग कई स्तरों पर रेखांकित हुआ है । नारी स्वतंत्र व्यक्तित्व पाने के लिए कभी-कभी प्राचीन मूल्यों को तोड़कर अपना निजी जीवन जीना चाहती है । इस प्रक्रिया में वह गहरे अंतर्द्वंद्व से भी गुजरती हैं । जीवन का यह द्वद्व कई कोणों से इन कहानियों में उभरता हैं । इनकी कहानियों में नारी के सम्बन्धों की जों स्थिति उभरती है उसमें नौकरीपेशा नारियों की स्थिति बड़ी भयंकर , करुण और त्रासद है । उन्हें नौकरी करते करते कभी अविवाहित रह जाना पड़ता है तो कभी अनचाहे साथी से विवाह करना पड़ता है, समग्र रूप से ये नारियां कहीं परिवार की उपेक्षा का शिकार हैं, कहीं सामाजिक प्रताड़ना तथा लांछन की कभी उन्हें पति की शंका का शिकार होना पड़ता है, इन सारी समस्याओं का और मानसिक संताप का चित्रा जी ने बड़ी खूबसूरती से सहज भाव से चित्रण किया है ।

5. भाषा स्पष्टता :- चित्रा मुद्गल जी जैसे जीवन में स्पष्ट वक्ता थी इसकी छलक उनकी कहानियों में भी देखने को मिलती हैं । इनकी रचित कहनियों में करदार कुछ न कुछ सीखते हुए दिखता है और कहानी की भाषा सरल, शुद्ध और स्पष्ट है । चित्रा जी ने अपनी कहानियों में शिल्प पक्ष को भी बड़ी खूबी से चित्रित किया है उनकी भाषा में बंबईया हिन्दी, अवधी, अंग्रेजी भाषा का बड़ा ही सशक्त मेल देखने

को मिलता है । मुहावरे और कहावते भी उनकी कहानियो की भाषा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है । साथ विश्लेष्णात्मक आदि सभी शैलियों का सफल प्रयोग उनकी कहानियों में हुआ है । चित्रा जी शिल्प के स्टार पर सिद्धहस्त कलाकार हैं, परन्तु शिल्प में कलात्मकता के प्रति दुराग्रही नहीं हैं । उनकी कहानियों की विषयवस्तु उनके विस्तृत अनुभव क्षेत्र को प्रस्तुत करती हर विज्ञापन की दुनिया हो या श्रमिक वर्ग की दुनिया सभी ओर लेखिका का पैनी नजर है । उनके पात्र भी यथार्थ जाने-पहचाने लगते हैं । उनके पात्र परिस्थितियों के मुताबिक व्यवहार करते हैं चित्रा जी लेखक के लिए सामाजिक सरोकारों को अनिवार्य मानती हैं उनके साहित्य का उद्देश्य है कि सोये हुए लोगों को जगाना । वे केवल समस्याएँ ही हमारे सामने प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि उसका समाधान भी देने का प्रयास करती हैं । कहानी मूलत: इतिहास रूप में होती है कितु जब कहानीकार अपने मूर्त विचार की व्यंजना करता है तो वे समाज के लिए एक जीवंत और अपने भाव पूर्ण रूप में आकर मार्गदर्शन करती हैं । यही नहीं कभी कभी कहानी समाज की दिशा और दशा दोनों ही बदल कर रख देती है, इस बात का इतिहास गवाह है कि जब भी साहित्य ने अपना राग छेंडा है तब तब समाज में क्रांति और बदलाव हुये हैं । कहानी का भाव अनेक दृष्टियों से अलग अलग हो सकता है । किन्तु उद्देश्य एक ही होता है समाज का उत्थान । चाहे वह किसी भी काल का कहानीकार हो अपने समय और समाज की आवश्यकता के आधार पर ही उसकी कहानी का मूलबिंदु निकल कर सामने आता है तभी तो कहा जाता है की "साहित्य समाज का दर्पण है" क्योंकि यह सर्वविदित है कि घटना और देश काल के आधार पर ही किसी कहानी की नींव होती है । कहानी कभी पूर्ण काल्पनिक हो ही नहीं सकती है । पर चित्रा जी में एक प्रकार के रहस्य और गुह्यता के भी दर्शन होते हैं। यह उनकी विशेषता और कमजोरी दोनों हैं। आगे चलकर जहाँ उनका दर्शन शिथिल और अन्वेषणहीन हो गया है वहाँ उसका तेवर अधिक स्थूल औऱ चटकीला है। परवर्ती कहानियों की मुद्राएँ इसी तरह की हैं। उनकी कहानियों की संरचना व्यक्ति के बिंदु से शुरु होती है। अवचेतन मन की कुछ गुत्थियाँ उछाल दी जाती हैं। वे कभी अपनी ही किसी दूसरी प्रवृत्ति अथवा बाह्य नैतिकता से टकराती हैं। यह टकराहट आत्मपीड़ा और अहं के विलगन में परिणत होकर कहानी बन जाती है। उनमें प्राय तार्किक अन्विति का अभाव मिलता है और उसकी पूर्ति वे तर्कातीत रहस्य से करते हैं। इस प्रकार से हिन्दी कहानी अपने आंतरिक तथा बाह्य दोनों रूपों में प्राचीन तथा मध्ययुग की कथा वार्ता से अलग आधुनिक चिंतन तथा चेतना का वाहक होकर प्रकट होती है, इसीलिए हिन्दी नवजागरण के साथ ही हिन्दी कहानी का जन्म हुआ है। इन अर्थो में अपने संपूर्ण परम्परा तथा इतिहास की विरासत को समेटे होने के बावजूद हिन्दी कहानी का जो रूप आज चित्रा जी की कहानियों में मिलता है वह आधुनिक है। इन्हीं अर्थो में हम हिन्दी कहानी को आधुनिक युग की विधा मान सकते हैं। यों तो कहानी को साहित्य की कसौटी के आधार पर परखने की दृष्टि और लिखने की नियमबद्धता बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक से ही प्रारम्भ हुई। इस दशक में हिन्दी कहानी कोई निश्चित रचना प्रक्रिया का विकास न कर सकी थी फिर भी तत्कालीन लेखकों के मन में कहानी लिखने की छटपटाहट अवश्य थी। कुल मिलाकर कहानी के उद्भव और विकास प्रक्रिया में इस दशक का महत्वपूर्ण स्थान है। सातवें दशक में कहानी की धाराएं बदल कर जीवन संघर्ष के रूप की कहानी के विकास पथ पर कदम बढ़ा रही थी।

6. ह्रदय-स्पर्शी कहानियाँ :- चित्रा जी की रचनाएँ ह्रदय को छू जाने वाली होती हैं इसका ज्वलंत उदहारण उनका "आवाँ" उपन्यास है, जो स्त्री विमर्श का उपन्यास होते हुए भी 'आवाँ' की दृष्टि स्त्रीवादी नहीं है, वह एक श्रमजीवा की दृष्टि है, कामगार की दृष्टि, इसीलिए ऊपरी तौर पर वह श्रमिक राजनीति पर लिखा गया उपन्यास लगता है, लेकिन गहराई में जाएँ तो हर जगह स्त्री-विमर्श की छायाएँ ही छायाएँ मँडराती नजर आती हैं। 'आवाँ' की नायिका नमिता पाँडे कामगार अघाड़ी में ट्रेड यूनियन का काम करने वाले मजदूर नेता देवीशंकर पाँडे की बेटी है, जो एक श्रमिक आंदोलन के दौरान हुए जानलेवा हमले में बच तो गए, लेकिन पक्षाघात के शिकार हो गए, चलने-फिरने तक से महरूम। उनकी पत्नी क्रूर और कर्कशा है, जो उन्हें ही नहीं, अपनी बड़ी बेटी नमिता को भी हमेशा जली-कटी सुनाती रहती है। माँ-बेटी पापड़ बेलने का काम करके किसी तरह गृहस्थी की गाड़ी को चलाने की कोशिश करती हैं। फिर अन्ना साहब उसे अपने पिता की जगह कामगार अघाड़ी की नौकरी दे देते हैं। बेटी जैसा मानते और कहते हुए भी एक दिन अन्ना साहब उसका यौन शोषण करने का प्रयास करते हैं तो नमिता का मोहभंग हो जाता है और वह कामगार अघाड़ी छोड़कर अन्यत्र नौकरी ढूँढ़ती है और एक मैडम अंजना बासवानी उसे संजय कनोई जैसे धनपति के स्वर्णिम जाल में फँसा देती है। चित्रा मुद्गल के पास मुंबइया हिंदी का ठोस आधार है, जिसमें ब्रज और अवधी की सरसता कुछ इस कदर घुलमिल गई हैं कि उनकी भाषा कबीर की तरह सधुक्कड़ी या कह लें पंचमेल खिचड़ी हो गई है, जो आम जनता के लिए सुपाच्य है जिसमें 'खड़ी बोली' का ठाठ तो है ही, राष्ट्रभाषा के जनभाषा में रूपांतर का अटपटा-सा लगने वाला सायास प्रयास भी दिखता है।

7. पत्र-पत्रिकाओं की कहानियाँ :- पत्र-पत्रिकाएँ मानव समाज की दिशा-निर्देशिका मानी जाती हैं। समाज के भीतर घटती घटनाओं से लेकर परिवेश की समझ उत्पन्न करने का कार्य पत्रकारिता का प्रथम व महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ सामाजिक व्यवस्था के लिए चतुर्थ स्तम्भ का कार्य करती हैं और अपनी बात को मनवाने के लिए एवं अपने पक्ष में साफ-सुथरा वातावरण तैयार करने में पत्र-पत्रिकाओं ने सदैव अमोघ अस्त्र का कार्य किया है। चित्रा मुद्गल जी की कहानियाँ समाज को एक नया आयाम प्रदान करती हैं साथ ही एक दर्पण की भांति बिना किसी भेदभाव के उनकी स्थिति से पूर्णतया रूबरू कराती हैं ।

सन्दर्भ सूची :-

क्रमांक	लेखक	शीर्षक	प्रकाशन	संस्करण
1.	चित्रा मुद्गल	चर्चित कहानियाँ	सामयिक प्रकाशन	वर्ष १९९२
2.	चित्रा मुद्गल	जिनावर	किताबघर प्रकाशन	वर्ष १९९६
3.	चित्रा मुद्गल	बयान	भारतीय ज्ञानपीठ	वर्ष २००४
4.	चित्रा मुद्गल	आदि-अनादि सम्पूर्ण कहानियाँ	सामयिक प्रकाशन	वर्ष २००७
5.	चित्रा मुद्गल	दस प्रतिनिधि कहानियाँ	किताब घर प्रकाशन	वर्ष २००५

6.	चित्रा मुद्गल	लपटें	भारतीय ज्ञानपीठ	वर्ष २००३
7.	डॉ. विनय कुमार	स्त्री विमर्श	भावना प्रकाशन,	वर्ष २००५
8.	डॉ. अर्चना मिश्रा	चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग-चिंतन	भारतीय पब्लिशर्स	वर्ष २००८
9.	www.chitramudgal.info			